SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल व संयुक्त परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

रश्मि शर्मा, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
मनीषा पाण्डे, (Ph.D.), शिक्षाशास्त्र विभाग
युवा व्यावसायिक शिक्षण महाविद्यालय, बजरंगगढ़, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

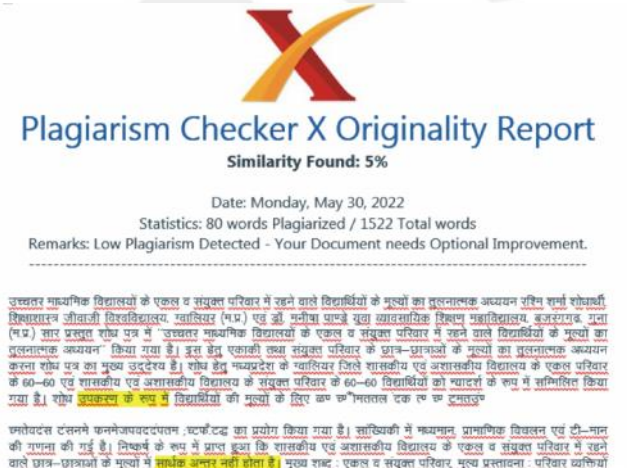

Corresponding Authors
रश्मि शर्मा, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
मनीषा पाण्डे, (Ph.D.), शिक्षाशास्त्र विभाग
युवा व्यावसायिक शिक्षण महाविद्यालय,
बजरंगगढ़, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/05/2022
Revised on : -----
Accepted on : 04/06/2022
Plagiarism : 05% on 30/05/2022

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल व संयुक्त परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है। इस हेतु एकाकी तथा संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। शोध हेतु मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार के 60–60 एवं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार के 60–60 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। शोध उपकरण के रूप में विद्यार्थियों की मूल्यों के लिए G. P. Sherry and R. P. Verma. Personal Values Questionnaire (PVQ–SV) का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान की गणना की गई है। निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल व संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

मुख्य शब्द

एकल व संयुक्त परिवार, मूल्य.

प्रस्तावना

परिवार व्यक्तियों का वह समूह होता है, जो विवाह और रक्त सम्बन्धों से जुड़ा होता है जिसमें बच्चों का पालन–पोषण होता है। परिवार एक स्थायी और सार्वभौमिक संस्था है किन्तु इसका स्वरूप अलग अलग स्थानों पर भिन्न हो सकता है। पश्चिमी देशों में अधिकांश नाभिकीय परिवार पाये जाते हैं। नाभिकीय परिवार वे परिवार होते हैं जिनमें माता–पिता और उनके बच्चे रहते हैं। इन्हें

एकाकी परिवार भी कहते हैं। जबकि भारत जैसे देश में सयुंक्त और विस्तृत परिवार की प्रधानता होती है। संयुक्त परिवार वह परिवार है जिसमें माता–पिता और बच्चों के साथ दादा–दादी भी रहतें हैं। यदि इनके साथ चाचा–चाची ताऊ या अन्य सदस्य भी रहते हैं तो इसे विस्तृत परिवार कहते हैं। वर्तमान में ऐसे परिवार बहुत कम देखने को मिलते हैं। व्यापारी वर्ग में विस्तृत परिवार अभी भी मिलते हैं क्योंकि उन्हें व्यापार के लिये मानव शक्ति की आवश्यकता होती है।

वर्तमान समय में परिवार का स्वरूप बदल रहा है। संयुक्त परिवार खत्म हो रहे हैं और एकल परिवार तेजी से बढ़ रहे हैं, अधिकतर परिवारों में वर्तमान समय में माता–पिता दोनों ही नौकरी करते हैं और बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। ऐसे में बच्चों को संयुक्त परिवार के बुजुर्गों द्वारा मार्गदर्शन मिलना बंद हो गया है क्योंकि अभिभावक अपने में ही व्यस्त रहते हैं और बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं, इससे बच्चों के मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

परिवार चाहे संयुक्त हो या एकल बालक का वह प्रथम स्थान है, जहाँ बालक बहुत सी बातें सीखता है। विद्वानों के अनुसार बालक के लिए परिवार प्रथम पाठशाला है और माता–पिता प्रथम गुरू। पारिवारिक परिवेश में बालक शैशव अवस्था से ही अपनी माँ और अन्य सदस्यों द्वारा चलना, बोलना, अपनी बात को व्यक्त करना, चीजों को पहचानना आदि बहुत सी बातों को सीखता है।

परिवार में जो मूल्यों दैनिक आचरण में व्यवहार में लाये जाते हैं उनका बच्चों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार संस्कारवान, नैतिकता, आस्थावान है तो उसमें पलने वाले बच्चों में भी इन्हीं मूल्यों का प्रस्फुटन होने लगता है।

एकल परिवार और संयुक्त परिवार में रहने वाले व्यक्तियों में भिन्नता होती है क्योंकि संयुक्त परिवार में बड़े बुजुर्गों की छत्रछाया में लोग जीवन व्यतीत करते हैं एवं परिवार में बड़ों से सदैव मार्गदर्शन लेते रहते हैं। परिवार का अनुभवी व्यक्ति परिवार में अपने अनुभव को बांटकर आगे आने वाली कठिनाईयों से अन्य सदस्यों को सचेत करता है। परन्तु एकल परिवार में यह सब संभव नहीं होता है क्योंकि पति–पत्नी जो निश्चय करते हैं उसी पर अमल करना पड़ता है। एकल परिवार में मूल्यों की क्या उपयोगिता है और संयुक्त परिवार में मूल्यों की क्या स्थिति है। इसी जिज्ञासा को लेकर शोधार्थी ने मन में यह शोध समस्या उभरी।

मूल्य

सी.वी.गुणः ''मूल्य और चारित्रिक विशेषता है, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है।''

मूल्यों का संबंध किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार में होता है। वहीं मनुष्य के व्यवहार को नियत्रिंत करते हैं और वही उसके जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। अतः व्यक्ति का कार्य चयन उसके मूल्य विकल्पों पर आधारित होता है। इस अर्थ में मूल्य को यदि परिभाषित किया जाये तो मूल्य समाज–सम्मत वांछित व्यवहार का मापदण्ड है। मूल्य परिस्थिति और विशेष घटनाओं से मुक्त होते हैं।

आलपोर्ट ने मूल्यों को मनोवैज्ञानिक आधार पर निम्नलिखित भागों में वगीकृत किया हैः

(a) सैद्धान्तिक मूल्य।
(b) सौंदर्यात्मक मूल्य।
(c) सामाजिक मूल्य।
(d) आर्थिक मूल्य।
(e) राजनैतिक मूल्य।
(f) धार्मिक मूल्य।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के बीच मूल्यों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैं:

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

शोध हेतु मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार के 60–60 एवं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार के 60–60 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण

विद्यार्थियों की मूल्यों के लिए G. P. Sherry and R. P. Verma. Personal Values Questionnaire (PVQ–SV) का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष

परिकल्पना 1: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शासकीय एकल परिवार के छात्र–छात्राएं	28.35	3.24	118	1.05
अशासकीय एकल परिवार के छात्र–छात्राएं	29.12	4.65		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

118 स्वतंत्रता अंश 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.98 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.05 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या

एकल परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है क्योंकि ऐसे परिवारों मात्र अभिभावक या दो बच्चे ही अधिकांश निवास करते हैं। जितना अभिभावक बच्चों को मूल्यों के प्रति सजग रखते हैं उतने ही बच्चे मूल्यों को आत्मसात करते हैं। बच्चे भले ही चाहें शासकीय विद्यालय के हों या अशासकीय विद्यालय के एकल परिवार होने की वजह से अधिक मूल्यों को आत्मसात नहीं कर पाते हैं और शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के एकल परिवार एक समान ही मूल्यों को विकास होता है।

परिकल्पना 2: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 2: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शासकीय संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राएं	27.20	3.59	118	1.83
अशासकीय संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राएं	28.45	3.90		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

118 स्वतंत्रता अंश 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.98 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.83 दोनों सार्थकता स्तर के मानों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है क्योंकि संयुक्त परिवार में रहने से बच्चों में परिवार के बड़े–बुजुर्ग मूल्यों को जाग्रत करने में सदैव आगे रहते हैं जिससे बच्चों में मूल्यों के प्रति जागरूकता की भावना स्वतः ही आ जाती है, परिवार में बड़े–बूढ़ों के मार्गदर्शन से वे आत्मसंयमित रहते हैं। विद्यालय चाहे शासकीय हो या अशासकीय संयुक्त परिवार का परिवेश एक सा ही रहता है इसीलिए दोनों ही विद्यालय के छात्र–छात्राओं में समान रूप से मूल्यों का विकास होता है।

सुझाव

(1) मूल्यपरक शिक्षा को हमारी शिक्षण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु मानकर उसका प्रावधान संपूर्ण देश में किया जाना चाहिए।

(2) नैतिक विकास में परिवार का वातावरण अपने से बड़ों का व्यवहार तथा माता–पिता के संस्कारों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपना परिवार में व्यवहार संयमित रखें।

(3) परिवार में माता–पिता में परस्पर सहयोग और प्रेम रहे ताकि बालक के चरित्र का विकास सहज रूप में हो सके।

(4) बच्चों को प्रेरक साहित्य पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि उनमें अच्छे नैतिक मूल्यों का विकास हो सके।

संदर्भ सूची

1. भार्गव, महेश (1979), *आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन,* एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
2. चौहान, ए. एस. (2006), *''एडवांस एजूकेशनल साइक्लोजी''* विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. सिंह, आर.पी. (2013–14), *''बाल विकास के मनोवैज्ञानिक आधार,''* अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
4. शर्मा, आर.ए. (2013), *''शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व,''* आर. लाल. बुक डिपो, आगरा।

****